रजिस्ट्रेशन क्रं. MPHIN/2007/27127

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-आठ
अंक - चौतीस

आशीर्वाद व प्रेरणा

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
से दीक्षित
आचार्यश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।

• परामर्शदाता •
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

• सम्पादक •
श्रीपाल जैन 'दिवा'
शाकाहार सदन, एल.आई.जी.-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-462003 (म.प्र.) फोन : 4221458

• प्रबंध सम्पादक •
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357

• सम्पादक मंडल •
डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

• कविता संकलन •
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

• प्रकाशक •
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-4902433, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

• आजीवन सदस्यता शुल्क •

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक		पृष्ठ
1. इण्डिया नहीं भारत बोलो (लीक से हट कर)	- आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज	2
2. सत्पथ-दर्पण	- पं. अजित कुमार शास्त्री	4
3. धर्म अपने अंदर में उतरना चाहिए	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी	8
4. गणितसार संग्रह	- अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन	9
5. तारंगा क्षेत्र की महिमा	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी	11
6. महामण्डल विधान में हुई जैनेश्वरी दीक्षाएँ	- हसमुखभाई दोशी	13
7. पारसचन्द से बने आर्जवसागर	- सहसम्पादकीय	15
8. तारंगा जी में आर्यिका दीक्षाएँ सम्पन्न	- हसमुखभाई दोशी	18
9. ध्यान के योग्य भाव	- आचार्यश्री आर्जवसागरजी	22
10. स्वभाषा और लिपियों पर गहराया संकट	- निर्मलकुमार पटौदी	26
11. हम कितने शाकाहारी	- संकलन	28
11. समाचार		39
12. प्रश्नोत्तरी		

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

इण्डिया नहीं भारत बोलो (लीक से हट कर)

-आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज

रहली (जिला-सागर मध्यप्रदेश) में पंचकल्याणक महामहोत्सव के अंतिम दिवस पर गजरथ यात्रा के बाद चारों दिशाओं से भक्तिवश पधारे लगभग एक लाख जैन-अजैन श्रद्धालुओं को उद्‌बोधन देते हुए योगीश्वर कन्नड़ भाषी संत विद्यासागर जी ने धर्म-देशना की अपेक्षा राष्ट्र, और समाज में आए भटकाव का स्मरण कराते हुए कहा कि आज जवान पीढ़ी का खून सोया हुआ है। कविता ऐसी लिखो कि रक्त में संचार आ जाय। उसका इरादा इण्डिया नहीं 'भारत' के लिए बदल जाय। वह पहले भारत को याद रखें। भारत याद रहेगा, तो धर्म-परम्परा याद रहेगी। पूर्वजों ने भारत के भविष्य के लिये क्या सोचा होगा? उन्होंने इतिहास के मंत्र को सौंप दिया। उनकी भावना भावी पीढ़ी की लाभान्वित करने की रही थी। वे भारत का गौरव, धरोहर और परम्परा को अक्षुण्ण चाहते थे। धर्म की परम्परा बहुत बड़ी मानी जाती है। इसे बच्चों को समझाना है। आज ज़िन्दगी जा रही है। साधना करो। साधना अभिशाप को भगवान बना देती है। जो हमारी धरोहर है। जिसे हम गिरने नहीं देंगे। महाराणा प्रताप ने अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। उनके और उन जैसों के स्वाभिमान बल पर आज हैं।

भारत को स्वतन्त्र हुए सत्तर वर्ष हो गए हैं। स्वतन्त्र का अर्थ होता है- 'स्व और तन्त्र'। तन्त्र आत्मा का होना चाहिए। आज हम, हमारा राष्ट्र एक-एक पाई के लिए परतंत्र हो चुका है। हम हाथ किसी के आगे नहीं पसारें। महाराणा प्रताप को देखो, उन जैसा स्वाभिमान चाहिए। उनसे है भारत की गौरवगाथा। आज हमारे भारत की पूछ नहीं हो रही है? मैं अपना खजाना आप लोगों के सामने रख रहा हूँ। आप लोगों में मुस्कान देख रहा हूँ। मैं भी मुस्करा रहा हूँ।

हमें बता दो, भारत का नाम 'इण्डिया' किसने रखा? भारत का नाम 'इण्डिया' क्यों रखा गया? भारत 'इण्डिया' क्यों बन गया? क्या भारत का अनुवाद 'इण्डिया' है? इण्डियन का अर्थ क्या है? है कोई व्यक्ति जो इस बारे में बता सके? हम भारतीय हैं, ऐसा हम स्वाभिमान के साथ कहते नहीं है। अपितु गौरव के साथ कहते हैं 'व्ही आर इण्डियन'। कहना चाहिए- 'व्ही आर भारतीय'। भारत का कोई अनुवाद नहीं होता। प्राचीन समय में 'इण्डिया' नहीं कहा जाता था। भारत को भारत के रूप में ही स्वीकार करना चाहिए। युग के आदि में ऋषभनाथ के ज्येष्ठ पुत्र 'भरत' के नाम पर भारत नाम पड़ा है। उन्होंने भारत की भूमि को संरक्षित किया है। यह ही आर्यावर्त 'भारत' माना जायेगा। पाठ्य-पुस्तकों के कोर्स में 'इण्डियन' का जो अर्थ लिखा गया है, वह क्यों पढ़ाया जा रहा है? इसका किसी के पास क्या कोई जवाब है? केवल इतना लिखा गया है कि अंग्रेजों ने ढाई सौ वर्ष तक हम पर अपना राज्य किया, इसलिए हमारे देश 'भारत' के लोगों का नाम 'इण्डियन' का पड़ गया है। इससे भी अधिक विचार यह करना है कि चीन हमसे भी ज्यादा परतन्त्र रहा है। उसे हमसे दो या तीन साल बाद स्वतन्त्रता मिली है। उससे पहले स्वतन्त्रता हमें मिली। चीन को जिस दिन स्वतन्त्रता मिली थी, तब के सर्वे सर्वा नेता ने कहा था कि हमें स्वतन्त्रता की प्रतीक्षा थी। अब हम स्वतन्त्र हो गए हैं। अब हमें सर्व प्रथम अपनी भाषा चीनी को सम्हालना है। परतन्त्र अवस्था में हम अपनी भाषा चीनी को कायम रख नहीं सके थे। साथियों ने

सलाह दी थी कि चार-पाँच साल बाद अपनी भाषा को अपना लेंगे। किन्तु मुखिया ने किसी की सलाह को नहीं मानते हुए चीनी भाषा को देश की भाषा घोषित किया। नेता ने कहा चीन स्वतन्त्र हो गया है और अपनी भाषा चीनी को छोड़ नहीं सकते। आज की रात से चीन में की भाषा चीनी प्रारम्भ होगी और उसी रात से वहाँ चीन की भाषा चीनी प्रारम्भ हो गयी। भारत में कोई ऐसा व्यक्ति है जो चीन के समान हमारे देश की भाषा तत्काल प्रारम्भ कर दे? कोई भी कठिनाई आ जाये देश के गौरव और स्वाभिमान को छोड़ नहीं सकते हैं। सत्तर वर्ष अपने देश को स्वतन्त्र हुए हो गए हैं। हमारी भाषायें बहुत पीछे हो गयी हैं। इंग्लिश भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की गलती हो रही है। मैं भाषा सीखने के लिए इंग्लिश या किसी भी अन्य भाषा को सीखने का विरोध नहीं करता हूँ। किन्तु देश की भाषा के ऊपर कोई अन्य भाषा नहीं हो सकती है। इंग्लिश भारतीय भाषा कभी नहीं थी और न है। वह अन्य विदेशी भाषाओं के समान ज्ञान प्राप्त करने का साधन मात्र है। विदेशी भाषा इंग्लिश में हम अपना सब कुछ काम करने लग जाय, यह गलत है। हमें दादी के साथ दादी की भाषा जो यहाँ बुन्देलखण्डी है, उसी में बात करना चाहिए। जो यहाँ सभी को समझ में आ जाती है। मैं कहता हूँ ऐसा ही अनुष्ठान करें।

श्री निर्मलकुमार पाटोदी, विद्या-निलय, 45, शान्ति निकेतन, इन्दौर-452010 मो.: 7869917070

सर्वोपरि स्थान है अहिंसा का

-आचार्यश्री आर्जवसागर

जैन गुरुदेव आर्जवसागरजी ने सभी धर्म व संप्रदायों में अहिंसा का स्थान सर्वोपरि है। दया ही धर्म का मूल है। इसी अहिंसा धर्म का पालन करने के लिए जैन धर्म में रात्रि भोज नहीं करने व पानी छान कर पीने की बात कही गयी है, क्योंकि जैन धर्म अहिंसामयी धर्म है। इसमें सभी जीवों के प्रति दयाभाव रखने की बात कही गयी है। उन्होंने दिगम्बर जैन धर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैनी रात्रि भोजन नहीं करते। यह धार्मिक के साथ वैज्ञानिक दृष्टि से निषेध है, क्योंकि दिन की बजाय रात में जीवों की उत्पत्ति ज्यादा होती है। रात्रि में भोजन तैयार करते समय भोज्य पदार्थ के साथ सूक्ष्म जीव मिल जाते हैं और उनका विष व्यक्ति को रोगी बना देता है। मुनिराज ने पानी छान कर पीने से होने वाले फायदों के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने पानी कम बहाने का आह्वान करते हुए कहा कि अनावश्यक अधिक पानी ढोलना यह अहिंसा धर्म के खिलाफ है। पहले जमाने में जब नदी, कुए आदि से पानी लाना पड़ता था और रस्से बाल्टी आदिक से मेहनत पूर्वक पसीना बहाते हुए खीचना पड़ता था लेकिन आज 'स्विच दबाया पानी आया' वाली स्थिति में व्यक्ति झाड़ू लगाने की जगह पानी ढोल रहा है गाड़ी को पोछने की बजाय उसको स्नान करवा रहा है इसीलिए तो वाटर लेवल घटता जा रहा है और फिर भी पानी को रोकने का तरीका न समझे तो समस्या का हल कहाँ मिलेगा? नल को खुला छोड़ना भी जल के साथ मजाक उड़ाना है।

साभार : आर्जव-वाणी

सलाह दी थी कि चार-पाँच साल बाद अपनी भाषा को अपना लेंगे। किन्तु मुखिया ने किसी की सलाह को नहीं मानते हुए चीनी भाषा को देश की भाषा घोषित किया। नेता ने कहा चीन स्वतन्त्र हो गया है और अपनी भाषा चीनी को छोड़ नहीं सकते। आज की रात से चीन में की भाषा चीनी प्रारम्भ होगी और उसी रात से वहाँ चीन की भाषा चीनी प्रारम्भ हो गयी। भारत में कोई ऐसा व्यक्ति है जो चीन के समान हमारे देश की भाषा तत्काल प्रारम्भ कर दे? कोई भी कठिनाई आ जाये देश के गौरव और स्वाभिमान को छोड़ नहीं सकते हैं। सत्तर वर्ष अपने देश को स्वतन्त्र हुए हो गए हैं। हमारी भाषायें बहुत पीछे हो गयी हैं। इंग्लिश भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने की गलती हो रही है। मैं भाषा सीखने के लिए इंग्लिश या किसी भी अन्य भाषा को सीखने का विरोध नहीं करता हूँ। किन्तु देश की भाषा के ऊपर कोई अन्य भाषा नहीं हो सकती है। इंग्लिश भारतीय भाषा कभी नहीं थी और न है। वह अन्य विदेशी भाषाओं के समान ज्ञान प्राप्त करने का साधन मात्र है। विदेशी भाषा इंग्लिश में हम अपना सब कुछ काम करने लग जाय, यह गलत है। हमें दादी के साथ दादी की भाषा जो यहाँ बुन्देलखण्डी है, उसी में बात करना चाहिए। जो यहाँ सभी को समझ में आ जाती है। मैं कहता हूँ ऐसा ही अनुष्ठान करें।

श्री निर्मलकुमार पाटोदी, विद्या-निलय, 45, शान्ति निकेतन, इन्दौर-452010 मो.: 7869917070

सर्वोपरि स्थान है अहिंसा का

-आचार्यश्री आर्जवसागर

जैन गुरुदेव आर्जवसागरजी ने सभी धर्म व संप्रदायों में अहिंसा का स्थान सर्वोपरि है। दया ही धर्म का मूल है। इसी अहिंसा धर्म का पालन करने के लिए जैन धर्म में रात्रि भोज नहीं करने व पानी छान कर पीने की बात कही गयी है, क्योंकि जैन धर्म अहिंसामयी धर्म है। इसमें सभी जीवों के प्रति दयाभाव रखने की बात कही गयी है। उन्होंने दिगम्बर जैन धर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैनी रात्रि भोजन नहीं करते। यह धार्मिक के साथ वैज्ञानिक दृष्टि से निषेध है, क्योंकि दिन की बजाय रात में जीवों की उत्पत्ति ज्यादा होती है। रात्रि में भोजन तैयार करते समय भोज्य पदार्थ के साथ सूक्ष्म जीव मिल जाते हैं और उनका विष व्यक्ति को रोगी बना देता है। मुनिराज ने पानी छान कर पीने से होने वाले फायदों के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने पानी कम बहाने का आह्वान करते हुए कहा कि अनावश्यक अधिक पानी ढोलना यह अहिंसा धर्म के खिलाफ है। पहले जमाने में जब नदी, कुए आदि से पानी लाना पड़ता था और रस्से बाल्टी आदिक से मेहनत पूर्वक पसीना बहाते हुए खीचना पड़ता था लेकिन आज 'स्विच दबाया पानी आया' वाली स्थिति में व्यक्ति झाड़ू लगाने की जगह पानी ढोल रहा है गाड़ी को पोछने की बजाय उसको स्नान करवा रहा है इसीलिए तो वाटर लेवल घटता जा रहा है और फिर भी पानी को रोकने का तरीका न समझे तो समस्या का हल कहाँ मिलेगा? नल को खुला छोड़ना भी जल के साथ मजाक उड़ाना है।

साभार : आर्जव-वाणी

ॐ नमः सिद्धेभ्य।

शान्तिर्जिनो में भगवान् शरण्यः।

सत्पथ-दर्पण

गतांक से आगे..... पं. अजित कुमार शास्त्री

आठवीं वार्ता

हिंसा करते हुए पुण्य या पाप

आत्मा के भाव तीन प्रकार के होते हैं- 1 अशुभ 2 शुभ और 3 शुद्ध। आर्तध्यान (दुःख-शोक-चिन्तामाय, रोगग्रस्तभाव) और रौद्रध्यान (तीव्रक्रोध, लोभ, अभिमान, मायाचार एवं निर्दयता, हिंसा, असत्य, धोखाधड़ी, चोरी डकैती बलात्कार व्यभिचार परिग्रहानंद के परिणाम) अशुभ परिणति के भाव हैं। इन परिणामों से असाता वेदनीय, नरक आयु, नरकगति आदि अशुभ कर्मों का आस्रव, बन्ध होता है।

सराग सम्यक्त्व, देश चारित्र (अणुव्रत), महाव्रत दया, दान, पूजा, परोपकार, धर्मध्यान आदि स्व-पर-हितकारी कार्य करना, सद्भावना के परिणाम शुभ भाव होते हैं। शुभ भावों से सुख सुविधा-जनक शुभ कर्मों का बन्ध होता है तथा कर्मों का संवर और निर्जरा भी होती है जो कि परम्परा से मुक्ति के कारण हैं। धर्मध्यान शुभ भावमय होता है।

प्रशस्त राग की अपेक्षा सातवें गुणस्थान से ऊपर के तथा अव्यक्त राग की अपेक्षा दशवें गुणस्थान से ऊपर ग्यारहवें गुणस्थान तक तथा उसके ऊपर रागद्वेष रहित शुद्ध परिणाम शुद्ध भाव होते हैं। शुद्ध-भाव मुक्ति के कारण हैं।

भावं तिविह पयारं, सुह असुहं सुद्धमेव तहा।
असुह च अट्टरुद्दं, सुह धम्मं जिणवरिंदेहिं ॥ 76 ॥
सुद्धं सुद्धसहायं.. ॥ 77 ॥

अर्थ- आत्मा के भाव तीन प्रकार के होते हैं अशुभ, शुभ और शुद्ध। आर्तध्यान रौद्रध्यान के परिणाम अशुभ होते हैं। धर्मध्यान के परिणाम शुभ रूप होते हैं। शुभ अशुभ भावों से रहित शुद्धस्वभाव रूप परिणाम शुद्ध होते हैं।

इनमें से अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, सन्तोष, दया, परोपकार, सदाचार के भाव अभव्य जीव के तथा भव्य मिथ्या-दृष्टि के भी होते हैं। मिथ्या-दृष्टि द्रव्यलिङ्गी मुनि भी बाह्य रूप के महाव्रत, समिति आदि चारित्र का आचरण करते हैं, जो मात्र पुण्यबंध के कारण हैं। अतः उनके परिणाम भी शुभ कहे जा सकते हैं, परन्तु असत्श्रद्धा (मिथ्यात्व) होने के कारण ये शुभ परिणाम संसार-भ्रमण के ही कारण होते हैं, मुक्ति के कारण नहीं होते। इसलिये वे परमार्थ से अशुद्ध हैं। (प्रवचनसार गाथा 9 पर श्री जयसेन आचार्य की टीका)

निदान-रहित सम्यग्दृष्टि के शुभ भाव (पुण्य) मोक्ष के कारण होते हैं क्योंकि उन भावों से संवर निर्जरा भी होती रहती है।

इसी कारण भाव संग्रह ग्रन्थ में श्री देवसेन आचार्य ने कहा है–

सम्मादिट्ठी पुण्णं णा होइ संसार कारणं णियमा।
मोक्खस्स होइ हेऊ, जइवि णियाण ण सो कुणई ॥402॥

अर्थ– सम्यग्दृष्टि का पुण्यभाव नियम से संसार का कारण नहीं होता। यदि सम्यग्दृष्टि निदान (आगामी सांसारिक भोगों की इच्छा) न करे तो उसका पुण्यभाव मोक्ष का कारण होता है।

गाय, हिरण, बकरा, मुर्गी, भैंसा आदि पशु पक्षियों का छुरी तलवार आदि से वध करते समय निर्दय तीव्र कषाय रूप अशुभ भाव होते हैं। उस क्रूर दुष्ट हिंसक परिणाम से नरकगति का कारण, अशुभ कर्म का बन्ध होता है।

किन्तु सोनगढ़ से प्रकाशित 'मोक्षमार्ग प्रकाशक किरण' पुस्तक के अ.3, पृ. 122 पर लिखा है–

'हिंसा करते समय भी कसाई को अल्प पुण्य बन्ध होता है।'

यह बात जैन आगम के विरुद्ध है क्योंकि हिंसा सब पापों में मुख्य है। बकरी, गाय, मुर्गी आदि की हिंसा करते समय तीव्र संक्लेश रूप दुष्ट परिणाम होते हैं। निर्दय तीव्र क्रोध आदि कषाय हिंसा करते समय होती है, अत: उन तीव्र संक्लेश परिणामों से कसाई के पाप कर्म का बन्ध होता है।

पुण्य-बन्ध मन्द कषायों से होता है, जो कि निर्दयता से जीवों का कत्ल करने वाले कसाई के जीवों का कत्ल करते समय होते नहीं हैं।

श्री पूज्यपाद आचार्य सर्वार्थसिद्धि (भारतीय ज्ञानपीठ, काशी से प्रकाशित) अध्याय 6 सूत्र 15 की व्याख्या में 333 वें पृष्ठ पर लिखते हैं–

''हिंसादिक्रूरकर्माजस्रप्रवर्तन परस्वहरणविषयातिगृद्धिकृष्णलेश्याभिजातरौद्रध्यानमरणकालतादि लक्षणो नारकस्यायुष आस्रवो भवति।''

अर्थ– हिंसा आदि क्रूर (निर्दय दुष्ट) कार्यों में निरन्तर प्रवृत्ति रखना, अन्य व्यक्ति का धन-अपहरण करना, विषय भोगों की अत्यन्त लोलुपता कृष्ण लेश्या से उत्पन्न रौद्रध्यान से मरण आदि नरक आयु के आस्रव के कारण हैं।

इसी प्रकार अन्य ग्रन्थों में भी निर्दय हिंसाकृत्य को नरक आयु आदि अशुभ कर्म-बन्ध का कारण बताया है। किसी भी ग्रन्थकार ने कत्ल करते समय कसाई को पुण्य-बन्ध होना नहीं बतलाया।

भ्रम का कारण

श्री कहानभाई निम्नलिखित दो भ्रमों के कारण, पशुओं का कत्ल करते हुए भी कसाई के पुण्यबन्ध होना बतलाते हैं–

1– शरीर, अगुरुलघु, निर्माण ये ध्रुवबन्धी पुण्य प्रकृति है। इन प्रकृतियों का बन्ध प्रतिसमय हुआ करता है। जैसे ये प्रकृतियाँ शुभ योग के समय बंधती हैं इसी तरह अशुभ योग के समय भी बंधती हैं। इन ध्रुवबन्धी पुण्य प्रकृतियों के कारण श्री कहानभाई कसाई के पशुवध करते समय पुण्यबन्ध होना समझते हैं।

नरकगति के साथ पंचेन्द्रिय जाति, त्रस, पर्याप्त, परघात आदि कुछ पुण्य प्रकृतियों का सन्निकर्ष है, अत:

पारसचन्द से बने आर्जवसागर

गतांक से आगे.........

सदलगा पंचकल्याणक हेतु निवेदन:-

बेलगाँव से विहार करके मुनिश्री आर्जवसागरजी ससंघ चिक्कोडी नगर पहुँचे वहाँ पर मंगल प्रवचन हुआ और दोपहर में 40-50 ब्रह्मचारीणी बहनें एवं आ. विद्यासागरजी के पूर्व अवस्था के भ्राता एवं कमेटी के लोग चिक्कोड़ी आये। और आचार्यश्री विद्यासागरजी के जन्म भूमि पर बने श्री शान्तिनाथ जिनालय के पंचकल्याणक में अपना परम सान्निध्य देने के लिए नम्र निवेदन किया फिर मुनिश्री ने भी आचार्यश्री विद्यागसारजी महाराज को आज्ञा हेतु पत्र लिखकर ब्रह्मचारीजी को भेजा था। फिर चिक्कोड़ी से विहार करके सदलगा में गाजे-बाजे के साथ मंगल प्रवेश हुआ एवं महाव्रती गण आर्यिका गुरुमति आदि आगवानी के लिए आये आर्यिकायें एवं बहिनों ने बड़े आदर पूर्वक मुनि श्री की तीन-तीन परिक्रमा लगाकर अपनी भक्ति दिखाई इस प्रकार मंगलमय रूप से सदलगा में मुनिश्री आर्जवसागरजी का प्रवेश हुआ।

सदलगा पंचकल्याणक कार्यक्रम:-

सदलगा पंचकल्याणक में मुनिश्री का मंगल प्रवचन विशाल पाण्डाल में हजारों लाखों की संख्या में जनता के बीच हुआ था एवं आचार्यश्री पर स्वयं लिखित कविता भी सुनाई थी और तमिल भाषा में भी प्रवचन किया था। मूलनायक श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रतिमा पर दीक्षा विधि संस्कार एवं विधिनायक प्रतिमा पर अंकन्यास सूर्यमंत्र आदि व केवलज्ञान की पूर्ण विधि संस्कार करने का सौभाग्य मुनिश्री आर्जवसागरजी को मिला था। इस पंचकल्याणक में आचार्यश्री के संघ के मुनिश्री नियमसागरजी, मुनिश्री आर्जवसागरजी, मुनिश्री उत्तमसागरजी, मुनिश्री पायसागरजी, मुनिश्री पुण्यसागरजी, मुनिश्री अपूर्वसागरजी, मुनिश्री अक्षयसागरजी, मुनिश्री सुपार्श्वसागरजी और आर्यिका गुरुमति आदि 80 आर्यिकायें थी। अन्य संघ के मुनिश्री जिनभूषण महाराज आदि मुनि लोग एवं आर्यिकायें, क्षुल्लक आदि भी पधारे थे, करीब 150 पिच्छियाँ थी। मुनिश्री आर्जवसागर महाराज कुछ दिनों तक अपने गुरु संघ के मुनियों के साथ मिलकर एक साथ रहे और पंचकल्याणक होने के बाद जिस दिन मुनिश्री विहार करने वाले थे उस दिन सब आर्यिकाओं ने आकर ''तीर्थोदय काव्य'' के कुछ पद्य सुने। फिर विहार करने के वक्त लोग थोड़े दिन और रुकने के लिए निवेदन कर रहे थे, लेकिन महाराजजी ने बोरगाँव के लिए विहार कर दिया। विहार में भेजने हेतु थोड़े दूर तक आर्यिकायें और बहिनें आयीं और उन्होंने भक्ति पूर्वक तीन-तीन परिक्रमायें लगाई थीं। बहुत भक्ति थी उनमें और मुनिश्री आर्जवसागरजी को भगवान करके पुकारती थीं। क्योंकि इनकी चर्या एवं मुद्रा ऐसे ही है।

दहीगाँव यात्रा:-

मुनिश्री विहार करते हुए बोरगाँव आये। वहाँ आदिसागरजी की गुफा भी देखी थी। उनके बड़े आकार का कमण्डल रखा हुआ था। ये वे आदिसागरजी थे जिनको चा.च.आ. शान्तिसागरजी महाराज अपने कंधे पर बिठा करके दूधगंगा और वेदगंगा नदियों को पार कराते थे। फिर वहाँ से समडोली गाँव गये थे। यही पर चा.च.आ.

पर्व पर मूलनायक पार्श्वनाथ भगवान के समक्ष निर्वाण कल्याणक हर्षोल्लास के साथ मनाया और छोटी-छोटी अनेक बच्चियों ने उस दिन उपवास किये। षोडसकारण पर्व के लिए मुनिश्री ने श्रावकों का उत्साह बढ़ाया। जो सोलहकारण पर्व करते हैं वे आगे तीर्थंकर भी बन सकते हैं इत्यादि उस पर्व की महिमा बताई। इससे षोडसकारण पर्व में 32 दिनों तक बहुत लोगों ने व्रत संयम के साथ यह पर्व मनाया। किसी ने एक आहार-एक उपवास के साथ यह व्रत किया। और भविष्य में भी यह व्रत करते रहेंगे ऐसा वहाँ के लोग सोलहकारण व्रत संकल्प लिया यह बहुत आनन्द की बात है। पर्यूषण पर्व में श्रावक साधना संस्कार शिविर चला था। दशलक्षण पर्व में करीब 35 लोगों ने दस-दस उपवास किये। जहाँ पर गुरु का हाथ या आशीर्वाद रहता है वहाँ पर श्रावकों की आत्म शक्ति जागृत हो जाती है। पर्व में तत्त्वार्थ सूत्र शास्त्र को अर्थ सहित पढ़ाया। सुबह दस धर्म पर प्रवचन हुये। फिर शाम को धर्म भावना शतक सुनायी गयी। यहीं पर यह शतक बनायी गयी थी पश्चात् अक्टूबर महिना में एक अहिंसा रैली निकलवायी थी। जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। अहिंसा का प्रचार किया। अहिंसा विषय पर डाक्टर्स सम्मेलन का कार्यक्रम रखा गया था। जिसमें डॉ. के.एम.गंगवाल, पूना आदि 25 डाक्टर्स लोगों ने भाग लेकर इस कार्यक्रम में अपने वक्तव्य दिये, अहिंसा की महिमा बताई। कौन-सी वस्तु कैसी बनती है? किससे बनाते हैं? कौन-सी शुद्ध है, कौन-सी अशुद्ध है इत्यादि अनेक बातों पर प्रकाश डाला और भी विद्वत्गण ने अपने वक्तव्य दिये और मुनिश्री आर्जवसागरजी ने भी अहिंसामय उद्बोधन दिया।

पश्चात् वारासानुवेक्खा शास्त्र जो कुन्दकुन्दाचार्य से रचित है, उस पर प्रवचन दिया और सम्यग्दर्शन रूढ़िवाद पर भी विशेष प्रवचन दिया। जिससे श्रावकगण वीतरागता के सच्चे पुजारी बने। प्रत्येक रविवार को विशेष प्रवचन होता था। पश्चात् प्रश्नमंच भी रखा जाता था। शास्त्र संगोष्ठी भी रखी थी जिसमें प्रवचन के पूर्व वहीं के श्रावक लोग एक-एक विषय पर अपना भाव व्यक्त करते थे। इससे माईक पर बोलने का और अपना ज्ञान को भी वृद्धिंगत करने का मौका मिला। दीपावली के समय चातुर्मास निष्ठापन हुआ और पिच्छि परिवर्तन का कार्यक्रम हुआ तथा कण्ठ पाठ प्रतियोगिता भी हुयी थी। प्रतियोगियों को पुरस्कारित भी किया गया था। इस प्रकार यह चातुर्मास एक एतिहासिक चातुर्मास रहा।

क्रमशः.....

उपयोग की प्राप्ति का क्रम

-आचार्यश्री आर्जवसागर

आचार्य आर्जवसागर जी ने अपने प्रवचन में कहा कि अशुद्धोपयोग को तो बुद्धि-पूर्वक छोड़कर शुभोपयोग में प्रवृत्ति की जाती है। अर्थात् पञ्च पापादिक छोड़कर व्रतादिक रूप आचरण किया जाता है। जबकि शुभोपयोग को छोड़ा नहीं जाता बल्कि जब अप्रमत्त अवस्था में वीतराग चारित्र रूप शुद्धोपयोग में यह आत्मा लीन हो जाती है तो शुभोपयोग स्वयमेव छूट जाता है। शुद्धोपयोग अधिक-से-अधिक अन्तर्मुहूर्त्त मात्र तक ही रह सकता है अगर आत्मा क्षपक श्रेणी पर चढ़ जाती है तो केवलज्ञानी बन जाती है। और नहीं तो प्रमत्त दशा में आने पर शुभोपयोग में ही प्रवृत्ति करना पड़ती है।

साभार : आर्जव-वाणी

ध्यान के योग्य भाव

गतांक से आगे......... आचार्यश्री आर्जवसागरजी

आत्मिक शक्ति अनुरूप कर्म निर्जरा और मुक्ति पथ की ओर बढ़ते हुए, मुक्ति पथ को पाने हेतु, जिस ध्यान के बारे में चिन्तन कर रहे हैं, वह ध्यान हमारे जीवन में, धर्म ध्यान के रूप से आ करके प्रतिपल प्रतिक्षण आत्मा को निर्मलता की ओर ले जाए यही हमारी आन्तरिक भावना है। हमारा ध्यान प्रशस्त कैसे बने? चूंकि संसार की प्रत्येक आत्मा ध्यान से सहित है, लेकिन वह ध्यान प्रशस्त पवित्र पुनीत होना चाहिए। जिसके माध्यम से कर्मों का संपादन दूर हो करके, और संसार के परिग्रह का मोचन हो करके कर्म से हम छूट कर के, कर्मों का विमोचन होकर के अपने गुणों का पूर्व उद्घाटन हो सके, बस यही हमारी भावना है। जो हमारे गुण अनादि काल से कर्मों के आवरण से आच्छादित हैं, वे गुण हमें दिख सकें, अनुभव में आ सकें और उस गुण रूपी संपदा से हम महान प्रभु बन सकें, बस। कहीं बाहर से नहीं, अपने अन्तर में ही उसे जगाना है। होता क्या है कि जब तक हम गुणों की पहचान नहीं कर पाते और जब तक हम अपने आत्मिक वैभव की पहिचान नहीं कर पाते, तब तक हम रंक बने रहते हैं, और अपने गुणों का भान होते ही हम राजा बन जाते हैं। राजा वह खजाने वाला होता है और- ''एवं हिजीवराया'' समयसार में आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी कहते हैं जीव राजा ''आत्मा राजा'' गुण रूपी खजाने से सहित है लेकिन हम रंक समझ रहे हैं अपने आप को, दीन हीन बने हैं और सोच रहे हैं कि मैं तो बहुत गरीब जैसा हूँ। कहीं बाहर से मेरे अंदर गुण आ जाएँ, कोई मुझे संपदा दे दे, गुण रूपी वैभव मुझे दे दे। एक गरीब व्यक्ति जो कि युवा है बचपन में पिताजी चल बसे थे और भारी संपदा थी ऐसा कहते हैं लेकिन कर्म उदय से संपदा कहाँ चली गई मालूम नहीं, फिर भी अपने बच्चे को दुखी करके कैसे जाएँ, नहीं तो भाव विहल होकर के कहीं पागल न हो जाए, मूर्छित न हो जाए अत: मरने से पहले थोड़ा वे एक जगह एक तिजोरी में कुछ दिखाते हैं और कहते हैं, लो बेटा बहुत सारा वैभव है इसमें, बेटा सोचता है बहुत चमकदार चीज इसमें रखी है तो यह रत्न मोती हीरा पन्ना होंगे। बहुत अस्वस्थ्य थे, कुछ दिनों के मेहमान थे, फिर कुछ दिनों बाद चल बसे। बेटा सोचता रहा कि बड़ी सम्पदा दे गए हैं। चलो इसको सुरक्षित रख लो जमीन के अन्दर रख लो बड़े होकर के काम में आएगी। ये बात पिताजी ने अपने भाई को बता दी थी कि मैंने बेटों को ऐसा सब कुछ कह दिया है, फिर चले गये थे। भाई ने भी सोचा कि किसी अपेक्षा से ठीक है, मेरे पास भी इतना धन नहीं लेकिन कुछ करता रहता हूँ, और वह जौहरी था रत्नों की पहचान करता था परख करता था वहीं पर भाई के बेटे को रख लिया। तू भी यही काम कर। काम करते-करते बहुत वर्ष बीते। जब बड़ा हो गया और सही-सही रत्नों की परख उसे होने लगी, थोड़ा बहुत देकरके उसे सम्पन्न भी कर दिया और रत्नों की परख जब मालूम पड़ गई उसे तुरन्त हाथ में लेकर के जान जाता था कि ये रत्न है, हीरा मोती पन्ना है कि काँच है क्या? तब बड़ा होने के बाद कहीं वह यह भरोसे में न रहा जाए कि धन रखा है, अत: उसको बुलाया और बोला बेटा अब तू देख ले अपने पिता की सम्पदा को। आपको कैसे मालूम? मुझे भी कहा था कि स्मृति दिला देना तो मैं कह रहा हूँ। आओ चाचाजी देख लेते हैं, घर जाकर के खोला तिजोरी को। लगता था किसी को मालूम नहीं है लेकिन चाचाजी को मालूम है लेकिन गंदी

जिसकी जैसी भावना है, भावना भव वर्धनी है और भावना भव नाशनी भी है। भावना के अनुसार ही फल मिलता है। इसलिए हम अपनी भावनाओं को ऐसा रूप दें , ऐसा स्वरूप दें कि जो भावना हमें इस संसार से उठा करके लोक की ऊंचाइयों तक ले जाए। तो भाव के बारे में कहते हुए वह श्लोक हमें याद करना है जो मुनियों के प्रतिक्रमण में मार्मिक अर्थ को लिये हुए मिलता है जिसे मैंने पहले कहा भी होगा लेकिन आज उसका यहाँ प्रेक्टिकल है जिस समय जो वस्तु आवश्यक होती है उस समय अवश्य उसे प्रयोग में लाना चाहिए। आज उसका यहाँ पर उपयोग है :-

समता सर्व भूतेषु संयमे शुभ भावना।
आर्त रौद्र परित्यागस्‍ तद्धि सामायिकं मतं॥

यह बहुत महत्वपूर्ण है, क्या बता रहे हैं? इसमें अपना भाव कैसा होना, कौन से भावों से दूर होना। पहले तो पाजिटिव वाली बात है फिर नेगेटिव वाली बात है। पहले कुछ पकड़ाते हैं फिर कुछ छुड़ाते हैं। तो समता रखना, सर्व भूतेषु, अर्थात् सर्व जीवेषु, सभी जीवों में समता, न छोटा न बड़ा, न अपना न तुपना , न अच्छा न बुरा, न राग न द्वेष सर्व जीवों के प्रति समता मैत्रीभाव और संयम, इन्द्रिय संयम, प्राणी संयम। इन्द्रियों को अपने कंट्रोल में रखना पांचों इन्द्रियों के विषयों में राग द्वेष नहीं करना और प्राणी संसार में एक इन्द्रिय से लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तक जितने भी प्राणी संसार में है उनकी हिंसा न हो जाए, उनका हमारे द्वारा कोई हनन न हो जाए उनको कोई बाधा न पहुँचे, अपनी मन वचन काय की क्रिया से कृत कारित अनुमोदना से, किसी भी तरह से, किसी भी जीव को कष्ट और बाधा न हो जाए, ऐसी अपनी प्रवृति, ऐसी अपनी क्रिया होनी चाहिए यही है सयंम। अब शुभ भावना प्रशस्त भावनाएँ अपने जीवन में अपनाना चाहिए। प्राय: आप जानते हैं सोलह भावना, बारह भावना और भी भावनाएँ होती हैं बहुत सारी भावनाएँ होती हैं व्रतों की भावनाएँ पाँच-पाँच भावना होती हैं। सोलह भावना किस लिए भाते हैं? और व्रतों की भावना तो इसलिए भाते हैं कि वे निर्दोष पलें। हमारे व्रत फसल के समान हैं और उसकी बाड़ के समान उसकी सुरक्षा के लिए भावनाएँ होती हैं। विशुद्धि के लिए भावनाएँ होती हैं। सोलह भावनाओं में भी व्रतों के लिए सब कुछ कहा गया है, शीलव्रतेषु अनतिचार भावना में तो पूरे बारह व्रत मुनियों के पूरे-पूरे शील सबका वर्णन है, अनतिचार में अतिचारों से रहित वर्णन आता है। दर्शन की विशुद्धि में तो मूल और चूल की बात आ जाती है मूल है तो चूल है। फाउन्डेशन की बात आ जाती है। सभी भावनाएँ बहुत मंगलमय हैं लेकिन क्यों भाते हैं सोलह भावना :-

दरश विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परम गुरु होय, जय-जय नाथ परम गुरु होय॥

क्या अर्थ है? दर्शन विशुद्धि भावना से सोलहवें तीर्थंकर बनना है क्या? कई लोग इसका अर्थ वैसा ही निकाल लेते हैं। इसलिए आज मैं उस तरफ थोड़ा सा गौर करके आपको दिखाना चाहता हूँ कि वास्तविक अर्थ क्या है? तो दर्शन विशुद्धि भावना भाय सोलह, तीर्थंकर पद पाय, दर्शन विशुद्धि आदि सोलह भावना भाय तो तीर्थंकर पद पाय। परम गुरु होय, परम गुरु से मतलब होता है ''तीर्थंकर'' तीन लोक के गुरु, महागुरु तीर्थंकर बनते हैं। इस प्रकार दर्शन विशुद्धि भावना को भाने से तीर्थंकर पद मिलता है और वह परम गुरु जगत गुरु हो

जाता है कि ऐसा अर्थ लेना कि दर्शन विशुद्धि आदि भावना जो भाते हैं वे सोलहवे तीर्थंकर बन जाते हैं ऐसा नहीं। क्या होता है कामा(,) देखना पड़ता है कि वह कहाँ लगता है।

आचार्यश्री की कविता है ''डूबो मत, लगाओ डुबकी'' यदि इसमें कामा(,) नहीं लगाया तो ''डूबो, मत लगाओ डुबकी भी पढ़ा जा सकता है। शब्द तो वे ही हैं अब तुम जहाँ से भी तोड़लो। इस प्रकार से हम अर्थ जैसा लगाना चाहें लगा सकते हैं, लेकिन अनर्थ नहीं होना चाहिए, अनर्थ हो गया तो अर्थ से कोई मतलब सिद्ध नहीं होता। इसलिए हम लोगों को प्रयोजन के अनुसार अर्थ निकालना चाहिए। और अपना प्रयोजन है मुक्ति पाना अपना प्रयोजन है अपने धर्म को बढ़ाना। इसलिए हम कभी अपने प्रयोजन को छोड़कर के अर्थ नहीं निकालेंगे। यदि हमने अपने श्रेष्ठ प्रयोजन को छोड़कर अर्थ निकाला तो अनर्थ हो जाएगा और उससे धर्म का विच्छेद हो जाएगा।

तो भावों के माध्यम से, सोलह कारण भावना के माध्यम से, भव का नाश हो जाता है। सोलह भावना में सभी भावना आ जाती हैं व्रतों की भावना आती है बारह भावना भी आ जाती है। शक्तितस्-त्याग भावना को ''तीर्थोदय काव्य'' में पढ़ोगे बारह भावना नयी वाली बनाकर रखी गयीं हैं क्योंकि त्याग तभी होता है जब व्यक्ति बारह भावना भाता है। सात भावना आप रोज ही पढ़ते हैं-

शास्त्रों का हो पठन....... तो लो सेऊँ चरण जिसके मोक्ष जो लो न पाऊँ।

इसमें सात भावनाएं हैं अच्छी भावनाएं हैं, मंगल भावनाएं हैं। चार भावनाएँ भी हैं। (मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, माध्यस्थ)

गुणियों को देखने से अपने आप हाथ जुड़ जाते हैं, जैसी जिसकी योग्यता हो भगवान गुरुओं को देखकर नमोस्तु हो जाता है, शास्त्र को नमस्कार, नव देवताओं को भी नमस्कार होता है। आर्यिका को वंदामि, क्षुल्लक ऐलक, क्षुल्लिका को इच्छामि कर लेते हैं लोग। ब्र. भइया बहिनों जी को वंदना कर लेते हैं, साधर्मी जनों से जय जिनेन्द्र कर लेते हैं। यदि बड़े हैं गुणों में उनको जय जिनेन्द्र करते हैं, सगे रिश्तेदारों के चरण छू लेते हैं लेकिन व्रतियों से न छुलवांए कोई व्रती बन गया, अणुव्रती बन गया, भले ही वो पहले पैर छूता था। अब अणुव्रती बन गया तो आप कह दो कि आपका गुणस्थान पंचम हो गया है तो व्रती है। यदि अभी अव्रती सम्यदृष्टि है तो चौथा गुणस्थान है। यदि सम्यत्व भी नहीं पल रहा है व्यवहार से सभी देवी देवताओं को पूजना पड़ रहा है, तो अज्ञान है पहले गुणस्थान में पड़ा है चौथा गुणस्थान भी नहीं है और तुम पंचम गुणस्थान में पहुँच जाओगे तो देवों से भी तुम पूज्य हो जाओगे अगर अव्रती हो तो मुझे आप नमस्कार न करें मेरे चरण आप न छुएं इतना कह देना चाहिए और नहीं कहेंगे तो आपको पाप लगेगा। और कहो कि मैं तो दामाद हूँ तुम ससुर हो। लेकिन अब जो व्रती बन गए उनसे चरण नहीं छुआओ, पाप लगेगा, कोई भी हो चाहे माता हो कि बहिन हो, कोई भी हो इन बातों में सजग होते हुए भूल न करें। चरण सबके नहीं छूना चाहिए। साधर्मी जनों से गले मिलो, जय जिनेन्द्र करो। आजकल सभी के चरण छूने की परिपाटी बना ली है, दोष लगता है। क्योंकि सैद्धांतिक सूत्र है कि असंजम ण वंदिव्वो - असंयमी वंदनीय नहीं है। सम्यग्दृष्टि आदरणीय जरूर होता है एक सीमा एक सीमा में।

क्रमशः ....

(संकलन-श्रीमति अनीता सुधीर जैन, डी.के. काटेज, भोपाल)

स्वभाषा और लिपियों पर गहराया संकट

–श्री निर्मलकुमार पाटोदी

नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री पद पर आसीन हुए डेढ़ साल हो गया है। वे चुनाव में पूरे में मतदाताओं से हिन्दी में बोले थे। मतदाताओं को हिन्दी में उनकी बातें समझ में आई। उन्हें लोकसभा में बहुमत मिल गया था। अगर अँग्रेजी में भाषण देते, तो उनके दल का एक सदस्य जीत नहीं सकता था। यह सत्य सभी दलों पर लागू होता है। देश के जन सामान्य के लिए विचारणीय मुद्दा यह है कि मतदाताओं की भाषा में प्रतिनिधि संसद में बोलते नहीं हैं। ऐसा दुनिया में कहीं नहीं होता है। हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य है कि हमारा संविधान मूल रूप से विदेशी भाषा अँग्रजी में बना है। संसद में सभी विधेयक मूल रूप से अँग्रेजी भाषा में तैयार होते हैं। कानून अँग्रेजी में बनाये जाते हैं। सर्वोच्च न्यायालय के कामकाज की भाषा अँग्रेजी हैं।

भारत सरकार का पूर्ण कामकाज अँग्रेजी में होता है। नोटशीट पर कामकाज अँग्रेजी में ही चलता है। राष्ट्र में शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा अँग्रेजी है। हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं में राज्य सरकारों का कामकाज होता ही नहीं है। सभी महत्त्व के कामकाज की भाषा हमारी अपनी भाषाएँ नहीं है। भारत गणराज्य हैं, किन्तु 'गण की भाषाएँ कार्यपालिका, न्यायपालिका व्यवस्थापिका, संसद और शिक्षा के क्षेत्र से अलग कर दी गयी है। लोकतन्त्र में मतदाताओं की भाषाओं को मृत होने का रास्ता दिखा दिया गया है। वे अँग्रेजी भाषा के साम्राज्यवादी षडयन्त्र का शिकार बनने को अभिषप्त हो चुकी हैं। वे पंगु अवस्था में हैं। अन्तिम स्वाँस लेने को विवश हैं।

हिन्दी भारत सरकार में दिखावे की प्रथम संवैधानिक राजभाषा है। सरकार के कामकाज की मूल भाषा है अँग्रेजी। सरकार के कामकाज में हिन्दी का उपयोग करने के लिए राजभाषा नियमों का जान बूझ कर पालन नहीं किया गया है। गृह मंत्रालय राजभाषा नियमों का पालन करने में अक्षम सिद्ध हो चुका है। वह सरकार अँग्रेजी के बढ़ रहे प्रभुत्व के लिए पूर्णत: जिम्मेदार है।

संविधान के अनुसार केन्द्र सरकार का प्रमुख प्रधानमंत्री होता है। एक ओर नरेन्द्र मोदी हिन्दी के लिए सरकार के बाहर स्वयं को संकल्पित दर्शाते हैं। दूसरी ओर प्रधानमंत्री के कार्यालय में अँग्रेजी का वर्चस्व है। सच्चाई वे जानते ही होंगे। बुधवार 23 दिसम्बर 2015 की नईदुनिया के पहले पृष्ठ पर हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड का पूरे पृष्ठ का विज्ञापन प्रकाशित हुआ है। नरेन्द्र मोदी के चित्र के साथ प्रकाशित विज्ञापन की पूरी सामग्री हिन्दी अखबार में अँग्रेजी में प्रकाशित हुई है। राजभाषा नियमों के अनुसार अखबार की भाषा में विज्ञापन का प्रकाशन कराया जाना चाहिए था। यह विचारणीय है। राजभाषा समितियाँ प्रभावहीन हैं। हिन्दी में जनता की ओर से भेजी जा रही ई–मेल का कभी उत्तर नहीं दिया है।

भारत सरकार के खर्च से हिन्दी के नाम पर दस विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं। उनमें लिए गए निर्णयों का अता–पता कहीं नहीं दिखाई दे रहा है। सम्प्रभू गणराज्य में राष्ट्र की भाषाओं का आस्तित्व दाँव पर है, संकट में है। हमारी भाषाएँ और लिपियाँ गहरे अंधकार में डूबती जा रही हैं। हमारा इतिहास, संस्कृति, परम्परा, जीवन–पद्धति, अध्यात्म और भाषाएँ जो हमारा ठोस आधार है। सभी मृत किए जाने के षडयंत्र का शिकार

हम कितने शाकाहारी ???

गतांक से आगे.... संकलन-प्रीतेश जैन

ICECREAMS

Company :- (1) Mother Dairy (2) Cream Bell (3) Dinshaw's (4) Vadilal (5) Nestle
(6) Top N Town (7) Kwality Wall's (8) B R Baskin Rdbins
(9) Nunula's Jicauan (10) Amul

LIST OF ICE - CREAMS

S.No.	Product	Ingredients
1	Vanila	E471/E407/E466/E415/E412
2	STRAWBERRY	E471/E407/E466/E415/E412
3	GREEN PISTA	E471/E407/E466/E415/E412
4	RAJBHOG	E471/E407/E466/E415/E412/E133/E102
5	CHOCOLATE	E471/E407/E466/E415/E412
6	KAJU DARK	E471/E407/E466/E415/E412
7	BUTTER SCOTCH	E102/E471/E407/E466/E415/E412
8	MANGO CUP	E471/E407/E466/E415/E412/E102
9	CORNIVAL CONE	E471/E407/E466/E415/E412/E122/ E102/E133
10	CHOCO BAR	E471/E407/E466/E415/E412
11	RASBHARI DOLLY	E471/E440/E407/E466/E415/E412
12	CASSATTA	E471/E440/E407/E466/E415/ E412/E102/E124/E127
13	ICE CANDY	E471/E407/E466/E440/E412/E102
14	SHAHI ANJIR	E471/E407/E466/E415/E412/E440
15	BLACK FOREST	E471/E407/E466/E415/E412/E440
16	SHAHI PISTA KULFI	E471/E407/E435/E412
17	MASTI KULFI	E471/E407/E435/E412
18	ROLL CUP	E471/E407/E466/E412/E435
19	SUNDAY SURPRISE	E407/E466/E415/E471/E412/ E440/E102/E122/E132
20	CHOCOLATE	E407/E466/E415/E471/E412/E440/ E102/E122/E132
21	KHATTA MEETHA MANGO	E407/E466/E415/E471/E412/ E440/E102/E122/E132
22	BLACK CURRENT	E407/E466/E415/E471/E412/ E440/E102/E122/E132
23	FROSTIC	E407/E466/E415/E471/E412/E440

ई नम्बर E.No.	ई नम्बर का नाम Full Name of E	श्रेणी Category	उत्पादन स्त्रोत Source of Product
E-120	कॉचनील/कारमिनिक एसिड Cochineal, Carminic Acid	लाल रंग खाद्य वस्तुओं को रंगने में उपयोग (Red Colour) Colour Use in Food Product in Coloring	प्राणी जन्य स्त्रोत मादा जानवरों को सुखा कर Animal Origin
E-153	कार्बन ब्लेक Carbon Black	कत्था/काला रंग खाद्य वस्तुओं में उपयोग Maroon/Black Colour Use in Food Product	प्राणी जन्य स्त्रोत Various parts of Animal
E-161G	केन्थाजेन्थिन Canthaxanthin	कलर–नारंगी खाद्य वस्तुओं में उपयोग Orange Colour Use in Food Product	मछली एवं पानी में हड्डी वाले जानवरों से Fish & Invertebrates with Hard Shells.
E-252	पोटेशियम नाइट्रेट Potassium Nitrate	आयोडीन रहित नमक पिकलिंग साल्ट Pikling Salt	प्राणी जन्य स्त्रोत Animal Origin
E-322	लेसिथिन Lecithins	इमलसीफायर व स्टेब्लाइजर खाद्य पदार्थों के रंगों को स्थाईत्व एवं आईसक्रीम को जल्दी पिघलने से बचाने के लिये उपयोग	अण्डा/जानवरों में पाई जाने वाली चर्बी Egg/Animal Fat अण्डे की जर्दी एवं पानी को मलाईदार बनाने के लिये
E-422	ग्लोयसरोल Glycerol	सुगर/मदिरा Sugar / Alcohal	प्राणी जन्य स्त्रोत/जानवरों की चर्बी से
E-441	जिलेटिन Geletine	इमसीफायर स्टेब्लाइजर Emulsifier and Stabilizer	प्राणी जन्य स्त्रोत जानवरों की चमड़ी एवं हड्डी से निर्मित Animal Origin
E-442	अमोनियम फॉस्फेटाइड्स Ammonium Phosphatides	इमल्सीफायर – ऊँचे तापमान में रंग न छूटे इसके लिये उपयोग	जानवरों में पाई जाने वाली चर्बी / Animal Fat
E-470A	सोडियम, पोटेशियम एण्ड कैल्शियम सॉल्ट्स ऑफ फैटी एसिड Sodium Potassium and	इमल्सीफॉयर / एन्टीकेकिंग एजेंट Emulsifier/Anti-Caking Agent	प्राणी जन्य स्त्रोत जानवरों की चर्बी से Animal Fat
E-470B	मेग्नीशियम स्टियरेट ऑफ फैटी एसिड्स Magnesium Stearate of Fatty Acids	इमलसीफॉयर/एन्टीकेकिंग एजेंट Emulsifier/Anti Caking Agent	प्राणी जन्य स्त्रोत Animal Fat
E-471	मोनो एण्ड डिग्लिसराइड्स ऑफ फैटी एसिड Mono & Diglycerides of Fatty Acids Animal Origin	इमलसीफॉयर Emulsifier खाद्य पदार्थों में स्पंज बनाने एवं	प्राणी जन्य स्त्रोत जानवरों की चर्बी से ज्यादा समय तक रखने के लिये
E-472·	मोनो एण्ड डायऐसिटाइलटारटेरिक	इमल्सीफायर	प्राणी जन्य स्त्रोत
A-F	E-472-A-F इमल्सीफायर Mono & Diglycerides of Fatty Acids Family E-472, A-F Emulsifier	Emulsifier	Animal Origin जानवरों की चर्बी से

E-475	पॉलीग्लायसरॉल एस्टर ऑफ फेटी एसिड Polyglyceral esters of Fatty Acids	इमल्सीफायर एण्ड स्टेब्लाइजर्स Emulsifier and Stabilizer	प्राणी जन्य स्रोत Animal Origin
E-476	पॉलीग्लायसरॉल पॉलीरीसाइनोलीट Polyglyceral Polyricinoleate	इमल्सीफायर एण्ड स्टेब्लाइजर्स Emulsifier and Stabilizer	प्राणी जन्य स्रोत Animal Origin
E-477	प्रोपेन -1,2 डायोल एस्अरस ऑफ फेटी एसिड्स Propane-1,2 Diol esters of Fatty Acids	इमल्सीफायर एण्ड स्टेब्लाइजर्स Emulsifier and Stabilizer	प्राणी जन्य स्रोत Animal Origin
E-478	लेक्टीलेटेड फेटी फेटी एसिड एस्टर्स ऑफ ग्लायसरॉल एण्ड प्रोपेन 1, 2, डायोल Lactylated Fatty Acids esters of Glycerol and Propane-1	इमल्सीफायर एण्ड स्टेब्लाइजर्स Emulsifier and Stabilizer	प्राणी जन्य स्रोत जानवरों की चर्बी से Animal Origin
E-479 B	थर्मली ऑक्सीडाइज्ड सोयाबीन ऑयल एण्ड डिग्लिसराइड्स ऑफ फैटी एसिड्स Thermally oxidized soyabean oil and diglycerides of Fatty Acids	इमल्सीफायर एण्ड स्टेब्लाइजर्स Emulsifier and Stabilizer	प्राणी जन्य स्रोत जानवरों की चर्बी से Animal Origin
E-481	सोडियम स्टीरॉयल-2 लेक्टीलेट Sodium Stearoyl-2 Lactylate	इमल्सीफायर एण्ड स्टेब्लाइजर्स खाद्य पदार्थों को स्पंज बनाने	प्राणी जन्य स्रोत Animal Origin
E-483	स्टीरियल टार्ट्रेट Stearoyl Tartrate	इमल्सीफायर एण्ड स्टेब्लाइजर्स	प्राणी जन्य स्रोत Animal Origin
E-542	बोन फॉस्फेट (खाने योग्य हड्डी) का पावडर Bone Phosphate	एन्टीकेकिंग एजेन्ट Anti Caking Agent	प्राणी जन्य स्रोत जानवरों की हड्डी से
E-572	मेग्नीशियम स्टीयरेट Magnesium Stearate	इमल्सीफायर/एन्टीकेकिंग एजेन्ट Emulsifier/Anti Caking Agent	प्राणी जन्य स्रोत जानवरों की हड्डी से
E-631	डीसोडियम इनोसीनेट Disodium Inosinate	स्वाद बढ़ाने वाला Flavour Enhancer	प्राणी जन्य स्रोत Animal Origin
E-635	डीसोडियम 5, राइबोन्यूक्लियोटाइड Disodium 5, ribonucleotides 5	स्वाद बढ़ाने वाला Flavour Enhancer	जानवरों की चर्बी से Animal Origin
E-640	ग्लायसाइन और इसका सॉल्ट सोडियम Glycine and its Sodium Salt	स्वाद बढ़ाने वाला Flavour Enhancer	जानवरों एवं मछलियों से Animal Origin
E-901	बीज्वेक्स (मधुमोम) Beeswax-white and yellow	खाद्य पदार्थों को चमकाने वाला Glazing Agent	मधु मक्खी द्वारा निर्मित Animal Origin
E-904	शीलेक Shellac	खाद्य पदार्थों को चमकाने वाला Glazing Agent	लाख के कीड़े से निर्मित Animal Origin
E-910	एल-सिस्टीन S~Cysteine	चाकलेट में उपयोग Improving Agent	मानव बाल एवं मुर्गी के पंख Human/Animal Origin
E-920	एल-सिस्टयन हाइड्रोक्लोराइड L-Cysteine Hydrochloride	चाकलेट में उपयोग Improving Agent	प्राणी जन्य स्रोत Animal Origin
E-921	एल-सिस्टयन हाइड्रोक्लोराइड मोनोहाइड्रेट L-Cysteine Hydrochloride Monohydrate	चाकलेट में उपयोग Improving Agent	प्राणी जन्य स्रोत Animal Origin

इन उत्पादों के अतिरिक्त अन्य उत्पादों में ई नम्बर देखकर उपयोग करें

COMPANY	Item	Animal Derived	Possibly Animal Derived	Harmful for Children
	GOOD DAY CAKE	E471	322	500ii, 503ii
	GOOD DAY BISCUIT	E471	322	500ii, 503ii
	TREAT	E471	322,481,472	500,503,223,102
	Nice Creame	E471	322, 481	500ii, 503ii
	Milk Bikist	E471	322, 481	500ii, 503ii
	50-50	1100,1001	341, 481, 500,	503,223,290
	Time - Pass	471,1100	322,378	500ii, 503ii,223
	Tiger	E471	322, 481(I)	500ii, 503ii
	Marri Gold	E471	481 (i)	500ii, 503ii, 223,150b
	Time Pass Namkin	471, 1101	322, 481	500ii, 503ii, 223
	Nutri Choice	471,1100-1	322,481,330,270	500ii, 503ii
	Treat Mango & Elaychi	E471	322,481,472e	500, 503,223,102
	Pune Magic, Chocolate	471, 1101	471, 322	500, 503
	Little Hearts	E471	481, 322	500, 503, 102
	Rusk	471, 1100	330	500ii, 503ii, 102
	Krack Jack Biscuit	E471	E322, E481, E270	E296
	Frooti Mango Juice	-	-	E110
	Parle-G Biscut	E471	E322, E481	-
	Hide & Seek Biscut	E471,1100	E322	E124
	Kismi Bar Toffee	-	E322	-
	Monaco Biscut	E471	E322,E481,E270	E269
	Orange Cream Biscut	E471	E322,E472	-
	Butter Cup Toffee	E102	E322,E481	E102
	Kaccha Mango Bite	E102	-	E102,E133
	Gol Gappa	-	-	E296
	Googlay	E471	322,481,335,336	500ii, 502ii, 223
	Top	E471	472,319	500ii, 503ii/223
	Spice	471	335,336,472	500,503,102
	Top Gold	E471	472,319,481	500ii, 503,223
	Marie	E471	481(ii), 319	500ii, 503,223
	Rusk	1100,1101	472,306,319,320	500, 503,223
	Butter Bite	E471	322,481,319	500ii,503,223
	Coconut	E471	322, 336, 335	500,503,223
	Classic Cream Biscuit	E471	E322,E481	-
	Snacky Zig Zug Biscuit	E471	E322,E481	-
	Cashew	471	481, 322	223, 102

	Butter Bite	E471	322	500ii, 503ii, 223
	CNC	471,1100-01	322,481,330,341	500,503,223,270
	CNC Bake	471,1100-01	322,481,330,341ii	500ii, 503ii, 270
	Snacks	471,1101	322,481	500ii, 503ii, 270
	Marie Lite	E471	322, 481	270
	Cookies	E471	322, 481	270
	Sunfeast Biscuit	E471	E322,E481	-
	Special Biscuit	-	E322	-
	Snacky Zig Zug Biscuit	E471	E481	-
	Five Star Chocolate	E471	E476	-
	Dairy Milk Chocolate	-	E476	-
	Born Vita Milk powdar	E471	E322	-
	Eclairs Toffee	E471	E476	-
	Fruit & Nut	442, 476		
	Crackle	442	476, 322	
	Bournrille	442	476,322	
	Perk	442	446,493,322,	150
	Milk Treat	442, 476		
	Gems	476,442	414,903,	102,133,122,124,
	Silk	442,447		
	Milk Chocolate	E471	E476	-
	Maggi	E631	E627	-
	Kitkat	516, 501(ii)		
	Boomer	-	-	E102, E124
	Boomer,Jelly	-	-	E110
	Center Fresh	E471, E422	-	-
	Santra Goli	-	-	E110,E102
	Gulcand Toffee	-	-	E133
	Maha Lacto	-	E322	-
	Gems	-	E476	E102,E132,E122,110
	Toffee Chocolate	E471	E322	-
	Eclairs	E471	E322, E476	-
Minto	Gol Mint	E904	-	-
Parry's	Coffee Bite	E471	E322	-
Heinz	Complain Milk Powder	-	-	E160b
Bingo	Tomato Chips	E631	E627	-

1. **आइसक्रीम का त्याग:** इसमें 55 % हवा तथा 35 % गंदे पानी को पैसा देते हैं मांसाहारी अंग जैसे पशुओं के नाक, कान, गुदा के भाग जो कत्लखानों की फर्श पर दुर्गन्धयुक्त हालत में पड़े रहते हैं, इनसे आइसक्रीम की ऊपरी परत बनाई जाती है ताकि मुंह में जाने के साथ चम्मच पर चिपका रहे, पिघले नहीं। साथ ही शक्कर, अण्डे, चर्बी, दूध का एसेंस मिलाया जाता है।
2. **जिलेटिन का त्याग:** जिलेटिन जानवरों की हड्डियों, त्वचा और रेशों को उबालकर बनाया जाता है इसका प्रयोग दही, आइसक्रीम, जैम, जैली, केक, शैम्पू, कास्मेटिक्स, दवाईयों आदि में होता है।
3. **जैली का त्याग:** जैली का निर्माण भी जिलेटिन से होता है और जिलेटिन जानवरों की हड्डियों, चर्म रेशों को उबलकर बनाया जाता है कुछ कम्पनियाँ वेजिटेबल गम से भी जैली बनती है। हमेशा लेबल देखकर खरीदें।
4. **चॉकलेट का त्याग:** चॉकलेट में सामान्यत: जानवरों से प्राप्त तत्वों का सम्मिश्रण होता है जैसे अंडे की जर्दी तथा जिलेटिन आदि। टार्किक डिलाई फ्रूट कांस, टॉफीज, पिपरमिंट में जिलेटिन होता है। नेस्ले किटकेट काफ-रेनेट से बनती है। यह रेनेट बछड़ों की अमाशय से मिलने वाले एसिड़ से बनता है।
5. **जैम का त्याग:** अधिकतर जैम्स में जिलेटिन का प्रयोग होता है जो मृत जानवरों की हड्डियों, रेशों, त्वचा को उबालकर बनाया जाता है।
6. **वारसेस्टर सोस:** इसमें एनकोविल नामक छोटी-छोटी मछलियों का चूर्ण मिलाया जाता है।
7. **शैलेक का त्याग:** यह कीड़ों की मृत काया का कलेवर होता हे। 333 ग्राम शैलेक निर्माण में लगभग 100000 कीड़ों को मारा जाता है। इसका प्रयोग कैडबरी कम्पनी के जेम्स व नटीज में मुख्यत: से किया जाता है। सामान्यतह यह अन्य उत्पादों में भी होता है।
8. **शैम्पू का त्याग:** कुछ किस्म के शैम्पुओं में अंडे मिलाये जाते हैं। शैम्पू को हानिकारक परीक्षण के लिए खरगोश की आँखों में डाला जाता है जिससे लाखों खरगोश अंधे होकर मर जाते हैं।
9. **सिल्क ऑयल पाउडर का त्याग:** रेशम के कीड़ों को मारकर प्राप्त किया जाता है। इसका प्रयोग बाल और त्वचा को चमकाने वाले कॉस्मेटिक पदार्थों में किया जाता है। जैसे: शैम्पू और पाउडर आदि।
10. **सोने व चांदी के वर्क का त्याग:** चांदी की पत्ती को गाय या भैंस की ताजा आँत में रखकर कूटकर बनाया जाता है इसका उपयोग मिठाई, पान सुपारी आदि में किया जाता है।
11. **अजीनों मोटो का त्याग:** यह मछली से बनता है। इसका उपयोग सॉस, चाऊमिन, सेंडविच और अन्य चायनीज खाद्य सामग्री में होता है।
12. **चीज का त्याग:** यह सामान्यत: दो सप्ताह से कम आयु के बछड़ो के अमाशय से मिलने वाले एसिड से बनाया जाता है। इसका प्रयोग दूध से चीज बनाने में होता है। इस एसिड के लिए लाखों बछड़ो को मार दिया जाता है।
13. **च्युइंगम का त्याग:** च्युइंगम में पशुओं से प्राप्त होने वाला ग्लिसरीन, जिलेटिन आदि आवश्यक रूप से मिला होता है। जानकारी करने के लिए इसका लेबल पढ़ सकते हैं।
14. **चिप्स का त्याग:** बाजार में उपलब्ध कुछ प्रकार की चिप्सों को पशुओं की चर्बी में तला जाता है पैकेट

पर ध्यान दें कि इन्हें वेजीटेबल ऑयल में तला है या नहीं।

15. **ग्लिसरीन का त्याग:** अधिकांश ग्लिसरीन मृत जानवरों को उबालकर प्राप्त की जाती है। जिसका सर्वाधिक उपयोंग कॉस्मैटिक्स, खाद्य पदार्थों, दूथपेस्ट, माऊथवाश, च्युइंगम, दवाओं व साबुनों आदि में होता है।

16. **सनटैन ऑयल का त्याग:** यह ऑयल कछुओं का मारकर प्राप्त किया जाता है। टूथ पेस्ट, टूथ पाऊडर अधिकतर टूथ पेस्ट में ग्लिसरीन (जो मृत जानवरों से प्राप्त होती हैं) मिलायी जाती हैं एवं कैल्शियम फास्फेट के लिए मृत जानवरों की (हड्डियों) का चूरा मिलाया जाता है, जो दांतों को चमकाता है।

17. **बोनचायना क्रॉकरी का त्याग:** बोन यानि हड्डी अर्थात सजो हड्डी की बारीक पीसकर साँचे में ढालकर फूलपत्ती प्रिंट कर तथा भट्टी में पकाकर आपके सामने चकमदार कम, प्लेट, डायनिंग सेट, आते हैं और उसको साफ करने के लिए बोन (हड्डी) पाउडर भी आता है।

18. **चाय, कॉफी का त्याग:** चाय के अंदर दस प्रकार के जहर होते हैं जैसे टेनिन, कैफिन, आदि। चाय, कॉफी से भूख मर जाती है और यह एक प्रकार का नशा है जो लगता है तो छूटता नहीं है, चाय से नींद न आना, स्मृति नष्ट होना आदि रोग होते हैं। कुछ चायों में फ्लेवर के रूप में पशुओं का खून मिलाया जाता है।

19. **धूम्रपान का त्याग:** तम्बाकू में निकोटिन रहता है जिससे व्यक्ति को बीड़ी/सिगरेट पीने की आदत पड़ जाती है तथा निकोटिन एक जहरीला पदार्थ है जो व्यक्ति के फेफड़ों को खराब कर देता है और कैंसर की संभावना बढ़ जाती है।

20. **पान-मसाला, गुटका का त्याग:** मादकता उत्पन्न करने के लिए छिपकली की पूंछ का प्रयोग किया जाता है धीरे-धीरे मुंह खुलना कम हो जाता है और बाद में गले का तथा गालों का कैंसर के फोड़े पड़ जाते हैं।

21. **साबूदाना का त्याग:** यह शकरकंद को उबालकर उसके घोल को महीनों तक बड़े-बड़े गड्ढों में सड़ाया जाता है इस प्रक्रिया में असंख्यात कीड़े इसके साथ सड़ जाते हैं। इसी से साबुदाना बनाया जाता है इसे पहले पैरों से रौंध कर पेस्ट बनाया जाता है तथा बाद में पाऊडर चढ़ाकर दाना बनाया जाता है।

22. **चमड़े का त्याग:** पशु को चार दिन तक भूखा रखा जाता है बाद में 200 डिग्री सें.ग्रे. का खौलता पानी डाला जाता है ताकि खाल मुलायम बनी रहे। बाद में इसके पेट मे हवा भरी जाती है जिससे पेट फूल जाता है और चमड़ी आसानी से निकल आती है।

23. **रेशम का त्याग:** रेशम उत्पादन में लाखों कीड़ों को खौलते गर्म पानी में डालकर उबाला जाता है। एक रेशमी साड़ी में 5000 कीड़ों का उपयोग किया जाता है।

24. **कस्तूरी का त्याग:** इत्र फुलेल आदि सुगंधित पदार्थ बनाने के लिए कस्तूरी प्राप्ति हेतु मृग मार दिये जाते हैं।

25. **नेलपालिश का त्याग:** इसमें जानवरों का खून मिलाया जाता है। व्हेल मछली को भी मारा जाता है।

पर ध्यान दें कि इन्हें वेजीटेबल ऑयल में तला है या नहीं।

15. **ग्लिसरीन का त्यागः** अधिकांश ग्लिसरीन मृत जानवरों को उबालकर प्राप्त की जाती है। जिसका सर्वाधिक उपयोंग कॉस्मैटिक्स, खाद्य पदार्थों, दूथपेस्ट, माऊथवाश, च्युइंगम, दवाओं व साबुनों आदि में होता है।

16. **सनटैन ऑयल का त्यागः** यह ऑयल कछुओं का मारकर प्राप्त किया जाता है। टूथ पेस्ट, टूथ पाऊडर अधिकतर टूथ पेस्ट में ग्लिसरीन (जो मृत जानवरों से प्राप्त होती हैं) मिलायी जाती हैं एवं कैल्शियम फास्फेट के लिए मृत जानवरों की (हड्डियों) का चूरा मिलाया जाता है, जो दांतों को चमकाता है।

17. **बोनचायना क्रॉकरी का त्यागः** बोन यानि हड्डी अर्थात सजो हड्डी की बारीक पीसकर साँचे में ढालकर फूलपत्ती प्रिंट कर तथा भट्टी में पकाकर आपके सामने चकमदार कम, प्लेट, डायनिंग सेट, आते हैं और उसको साफ करने के लिए बोन (हड्डी) पाउडर भी आता है।

18. **चाय, कॉफी का त्यागः** चाय के अंदर दस प्रकार के जहर होते हैं जैसे टेनिन, कैफिन, आदि। चाय, कॉफी से भूख मर जाती है और यह एक प्रकार का नशा है जो लगता है तो छूटता नहीं है, चाय से नींद न आना, स्मृति नष्ट होना आदि रोग होते हैं। कुछ चायों में फ्लेवर के रूप में पशुओं का खून मिलाया जाता है।

19. **धूम्रपान का त्यागः** तम्बाकू में निकोटिन रहता है जिससे व्यक्ति को बीड़ी/सिगरेट पीने की आदत पड़ जाती है तथा निकोटिन एक जहरीला पदार्थ है जो व्यक्ति के फेफड़ों को खराब कर देता है और कैंसर की संभावना बढ़ जाती है।

20. **पान-मसाला, गुटका का त्यागः** मादकता उत्पन्न करने के लिए छिपकली की पूंछ का प्रयोग किया जाता है धीरे-धीरे मुंह खुलना कम हो जाता है और बाद में गले का तथा गालों का कैंसर के फोड़े पड़ जाते हैं।

21. **साबूदाना का त्यागः** यह शकरकंद को उबालकर उसके घोल को महीनों तक बड़े-बड़े गड्ढों में सड़ाया जाता है इस प्रक्रिया में असंख्यात कीड़े इसके साथ सड़ जाते हैं। इसी से साबुदाना बनाया जाता है इसे पहले पैरों से रौंध कर पेस्ट बनाया जाता है तथा बाद में पाऊडर चढ़ाकर दाना बनाया जाता है।

22. **चमड़े का त्यागः** पशु को चार दिन तक भूखा रखा जाता है बाद में 200 डिग्री सें.ग्रे. का खौलता पानी डाला जाता है ताकि खाल मुलायम बनी रहे। बाद में इसके पेट मे हवा भरी जाती है जिससे पेट फूल जाता है और चमड़ी आसानी से निकल आती है।

23. **रेशम का त्यागः** रेशम उत्पादन में लाखों कीड़ों को खौलते गर्म पानी में डालकर उबाला जाता है। एक रेशमी साड़ी में 5000 कीड़ों का उपयोग किया जाता है।

24. **कस्तूरी का त्यागः** इत्र फुलेल आदि सुगंधित पदार्थ बनाने के लिए कस्तूरी प्राप्ति हेतु मृग मार दिये जाते हैं।

25. **नेलपालिश का त्यागः** इसमें जानवरों का खून मिलाया जाता है। व्हेल मछली को भी मारा जाता है।

26. **लिपिस्टिक का त्याग:** लिपिस्टिक के उत्पादन में मोम का प्रयोग होता है जो मधुमक्खियों के छत्तों से प्राप्त होता है इसमें चमक हेतु सुअर की चर्बी मिलाई जाती है।

27. **सेन्ट का त्याग:** सेन्ट उत्पादन के लिए हजारों बिज्जू मारे जाते हैं। बिज्जू को बेंतों से मारा जाता है तथा चाकु से खरोंचा जाता है।

28. **कोसे का त्याग:** रेशम के हजारों कीड़ों को उबालकर कोसे का वस्त्र बनता है। 100 ग्राम कोसा = 15000 कीड़े।

29. **केप्सूल का त्याग:** केप्सूल जिलेटिन नामक पदार्थ से बनती है। जिलेटिन हड्डियों, खुरों व पशुओं की झिल्लियों को उबालकर प्राप्त किया जाता है।

30. **हाथी दांत का त्याग:** हाथी दांत प्राप्त करने के लिए लाखों हाथियों को जहर देकर मारा जाता है इन हाथी दांतों से चूड़ियाँ व बच्चों के खिलौने एवं अन्य आभूषण निर्मित किये जाते हैं।

31. **पुताई के ब्रश का त्याग:** नई किस्म के रंगाई ब्रश, पुताई ब्रश, हेयर ब्रश, कलाकारी ब्रश बनाने के लिए सुअरों की भौहें पलकों व शरीर के बालों को नोच लिया जाता है।

32. **सिन्थेटिक कत्था:** इसके निर्माण में आरारोट, लाल रंग, मुलतानी मिट्टी जूते की पॉलिश एवं पशुओं के सूखे हुये खून का प्रयोग किया जाता है।

33. **शहद का त्याग:** शहद यूं तो सामान्यत: मधुमक्खियों का उबाल माना जाता है परंतु वर्तमान मे ज्यादा एवं शीघ्र शहद प्राप्त करने के लिए मधुमक्खियों को भी छत्तों सहित निचोड़ दिया जाता है।

34. **शीतल पेय कोल्ड ड्रिंक का त्याग:** बाजार में उपलब्ध सभी शीतल पेय पदार्थों में ग्लिसरॉल मिला दिया जाता है जो मृत जानवरों से प्राप्त होता है। साथ ही इसमें कार्बोलिक अम्ल, फास्फोरिक अम्ल, बेन्जोइन रसायन साइट्रिक एसिड मिठास के लिए एम्परटेम क्रीम एवं ज्यादा समय तक खराब न होने से बचाव के लिए सोडियम बेंजोएट जैसे केमिकल्स का प्रयोग होता है जो व्यक्ति को कैंसर व आँतों की सड़न जैसी बीमारियों का तोहफा देती हैं।

एक शोध के अनुसार बाजार में उपलब्ध सभी शीतल पेयों में हानिकारक कीटनाशक मौजूद हैं। जिन्हें फसलों में कीड़े मारने और टॉयलेट में कीटाणु मारने में उपयोग किया जाता है। मिरिन्डा में 30 गुना, कोकाकोला में 75 गुना, फेन्टा में 43 गुना, पेप्सी में 25 गुना, डाइट पेप्सी में 14 गुना, स्प्राईट में 11 गुना, लिम्का में 30 गुना, थम्सअप में 25 गुना अधिक मात्रा में हानिकारक कीटनाशक मौजूद है एवं आश्चर्य की बात यह है कि यह कीटनाशक सिर्फ भारतीय बाजार में उपलब्ध कोल्ड ड्रिंक में ही मौजूद हैं, अमेरिका में उपलब्ध पेयों में इनकी मात्रा शून्य है।

35. **मोती का त्याग:** मोती के निर्माण में केल्शियम कार्बाइड का प्रयोग कर सीप के अन्दर आयस्टर नामक जीव की हत्या की जाती है और कृत्रिम मोती निर्माण में मछलियों के चमड़े के छिलके का उपयोग किया जाता है छिला कूटकर रस का निर्माण होता हे जो कांच की मणियों पर लगाने से वह मोती जैसा जमकता है।

36 **शटलकॉक का त्याग:** बेडमिन्टन के खेल में प्रयुक्त शटलकॉक (चिड़िया) के पंखों के लिए लाखों बतखों को मार दिया जाता है। साथ ही इसके पीछे की पेन्दी में लागे कार्क्स में चमड़े को लपेटा जाता है इसके पंखों को धागे से बांध देने के बाद जिलेटिन का घोल चढ़ाया जाता है जिसके लिये हजारो पशुओं की हत्या कर दी जाती है।

37. **नींबु का सत (टाटरी) मांसाहारी है:** नींबु का सत नींबु से नहीं बनता। शक्कर का वेस्टैज पदार्थ सीरा में 250 ग्राम विशेष प्रकार के जीवाणु डाले जाते हैं वे इस सीरा को खाते हैं। निहार (मल) के रूप में खट्टा पदार्थ निकालते हैं। यह प्रक्रिया 7 दिनों तक चलती रहती है और जीवों की संख्या असंख्य हो जाती है बाद में गर्म भाप से निकाला जाता है तो मरे जीवों का लोंदा इकट्ठा हो जाता हे बाद में मशीन से बारीक क्रिस्टल बनाये जाते हैं अत: यह नींबू का सत (फूल) मांसाहारी है।

38. **कृत्रिम घी का त्याग:** यह पूर्ण रूप से जानवरों की चर्बी, रिफाइंड तेल का होता है जिसमें खुश्बू के लिए जर्मन से आयात कृत्रिम एसेन्स डाला जाता है तथा ज्यादा समय तक बनाये रखने के लिए कीटनाशक का भी समावेश किया जाता है बाजार में 80% यही घी उपलब्ध है।

39. **एलबुमेन का त्याग:** इसे हम अण्डे की जर्दी कह सकते हैं जिसका प्रयोग मिठाईयों /ब्रेड में किया जाता है मिठाई व ब्रेड पर पड़ने वाली परत इस एलबुमेन की देन होती है। यह बर्गर में ऊपर चिकनापन बनाने में किया जाता है तथा उस पर तिल के दाने चिपका देते हें। ताकि देखने में अच्छा लगे।

40. **रेडिमेड आटा का त्याग:** कुछ मशहूर ब्राण्ड के रेडीमेड आटे में मछलियों का चूर्ण या हड्डियों का पाऊडर मिलाया जाता है इसके लिए समुद्र के किनारे पर लहरें आती तथा वापिस चली जाती हैं लेकिन छोटी-छोटी मछलियाँ किनारे पर ही रह जाती हैं। उन्हें बाद में धूप में सुखा कर पीस लिया जाता है फिर आटा- नमक आदि में मिलाया जाता है ताकि उसका स्वाद कुछ भिन्न ही आये।

41. **ब्रेड बिस्कुट-टोस्ट-डबलरोटी-पाव-नान खटाई आदि बेकरी का त्याग:** यह सब मैदे से बनती है जिसमें लाखों जीव रहते हैं। तथा पेट का पाचन तंत्र खराब हो जाता है अनेक ब्रांड के ब्रेड, केक, बिस्कुट केंडी, चाकलेट बनाने में अण्डा और जिलेटिन का प्रयोग किया जाता है खाद्य पदार्थ मिलावट प्रतिबंधक नियम अ-18/07 के अनुसार आइसक्रीम की तरह बिस्कुट में अंडों का मिश्रण करने पर उसकी सूचना अथवा विज्ञापन भी जारी करना अनिवार्य नहीं है।

42. **मेडिकर का त्याग:** जुएँ मारने वाले तरल पदार्थ के उपयोग से मस्तिष्क का कैंसर हो जाता हें तथा असंख्यात त्रस जीवों की हिंसा का पाप लगता है।

43. **इन्सुलिन का त्याग:** मधुमेह (डायविटीज) के रोगियों को दिया जाने वाला इन्सुसलिन गाय, बछड़ा बैल, भेड़ गाय, बछड़ा बैल, भेड़ और सुअर के पेन्क्रियाज में से प्राप्त किया जाता है। इस कारण बहुत से पशुओं को मौत के घाट उतार दिया जाता है।

44. **नहाने का साबुन का त्याग:** दैनिक उपयोग में आने वाले कई ब्राण्डों के साबुन में चर्बी मिलाई जाती है।

45. **टूथ पाउडर का त्याग:** कई टूथ पाउडर में हड्डी व अन्य शुद्ध पदार्थ मिलाये जाते हैं जिससे दांतों में

चमक बनी रहती है।

45. टूथ पेस्ट का त्याग: कई टूथ पेस्टों में चर्बी मिलाई जाती है। प्रत्येक टूथ पेस्ट में सर्बिटोल, सोडियम लारिल सल्फेट, क्लोराइड मिलाया जाता है। क्लोराइड सरासर घातक विष है तथा केल्शियम फास्फेट होता है जो जानवरों की हड्डियों को पीसकर बनाया जाता है। कुछ टूथ पेस्टों में ग्लिसरीन का भी उपयोग कि जाता है जो जानवरों से प्राप्त किया जाता है।

46. पोलो-मिंट-मिंटोफ्रेश का त्याग: इनमें कई गाय की चर्बी मिलाई जाती है जिससे मांसाहार का दोष लगता है।

47. फिलटर का पानी का त्याग: Acquagaurd आदि फिल्टरों में पानी को साफ करने के लिए गाय की हड्डियों का चूरा (एक्टिवेटेड चारकोल) डाला जाता है जिससे पानी साफ होता है तथा स्वाद अलग ही आता है।

48. सिन्थेटिक दूध, मट्ठा का त्याग: इसमें यूरिया (खाद) रिफाइन्ड तेल, डिटरजेन्ट, शक्कर, नमक, सतरीठा, अरारोट, पाऊडर तथा बबूल की गोंद मिलाई जाती है। जो स्वास्थ के लिए घातक है।

49. पेटीज (बेक समोसा का त्याग): पेटीज में मूलभूत रूप से अण्डे का उपयोग किया जाता है अण्डे की पॉलिश में करारापन (Crunchyness) आता है। अण्डे की पालिश ऐसा करना संभव नहीं है और आज कल बाजार में विविधता के रूप में चिकन मेटीज भी उपलब्ध है जो पूर्ण रूप से मांस ही से ही निर्मित होती है।

(यदि आप खुद को और दुनिया को इन घिनौनी सच्चाईयों को बतलाना चाहते हैं तो शुरुआत अपने उपयोग में आ रही चीजों से कीजिए। निर्माताओं और वितरकों को लिखिए। सच्चाईयों को सामने लाईए। आपका प्रयास चमत्कार करेगा)

सत्य जानिये

पटेटो चिप्स तथा बेफर्स: वेफर्स में पर्याप्त मात्रा में अण्डे भी पड़ते हैं। इन वेफर्स भार में अत्यंत हलका करारा, फुसफुसा और सुनहरी पीले रंग की होने का एक मात्र कारण इनमें मिले हुए अण्डे ही होते हैं। घरों में निर्मित आलू के पापड़ों और इन वेफर्स में स्वाद, रंग, करारेपन और भार का जो भी अंतर होता है उसका मूल आधार पर्याप्त मात्र में अण्डों का प्रयोग है। सैद्धान्तिक रूप से तो इनमें ताजा अण्डों का प्रयोग अधिक अच्छा रहता है, परन्तु इनकी उपलब्धता और अधिक कीमत एक बड़ी बाधा है। यही कारण है कि लगभग सभी निर्माता ताजा अण्डों के स्थान पर इनके सूखे पाउडर को पानी में घोलकर प्रयोग करते हैं।

(कम्पलीट स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज पुस्तक के पृष्ठ सं. 347 से संकलित, लेखक कृष्ण कुमार अग्रवाल)

नूडल्स : नूडल्स सामान्य सेवइयों की अपेक्षा अधिक चिकने और चमकदार होते हैं। प्रति किलोग्राम मैदा में दस से बीच मि.ली. अण्डे की सफेदी अथवा अण्डों की सफेदी के पाउडर का घोल मैदा गुंथते समय मिला लेने पर नूडल्स अधिक मुलायम, चिकने और फुसफुसे तैयार होते हैं।

(कम्पलीट स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज पुस्तक के पृष्ठ सं. 355 से संकलित, लेखक कृष्ण कुमार अग्रवाल)

आइसक्रीम: आइसक्रीम में चिकनाई और स्निग्धता बढ़ाने के लिए अण्डों की सफेदी और जिलेटिन का प्रयोग भी अनिवार्य रूप से होता है। साफ-सुथरी और गन्धरहित सरेस को जिलेटिन कहा जाता है और प्रति किलोग्राम मिश्रण में मात्र सात-आठ ग्राम इसे मिलाना ही पर्याप्त रहता है ताजे अण्डों के स्थान पर प्रायः ही अण्डों की सफेदी के पाउडर को आठ गुने ठण्डे पानी में घोलकर चार घण्टे रखने के बाद प्रयोग किया जाता है।
(कम्पलीट स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज पुस्तक के पृष्ठ सं. 402 से संकलित, लेखक कृष्ण कुमार अग्रवाल)

बिस्कुट: बिस्कुटों के निर्माण में प्रमुख कच्चामाल तो मैदा ही है, इस के साथ ही चीनी और नमक भी सभी बिस्कुटों में पड़ते ही हैं। इन्हें फुलाने के लिए खमीर के स्थान पर बेकिंग पाउडर, खाने के सोडे, अमोनिया तथा अण्डों का प्रयोग किया जाता है। ताजा अण्डों के स्थान पर प्रायः ही अण्डों के सफेद भाग के सूखे पाउडर को पानी में घोलकर प्रयोग करते हैं ग्लूकोज बिस्कुटों में ग्लूकोज के पूरक के रूप में मक्का के स्टार्च का प्रयोग होता है और मिश्रण को फुलाने के लिए अण्डों के पाउडर का प्रयोग किया जाता है।
(कम्पलीट स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज पुस्तक के पृष्ठ सं. 388 से संकलित, लेखक कृष्ण कुमार अग्रवाल)

सर्वोपरि स्थान है अहिंसा का

आचार्यश्री आर्जवसागर

जैन गुरुदेव आर्जवसागरजी ने सभी धर्म व संप्रदायों में अहिंसा का स्थान सर्वोपरि है। दया ही धर्म का मूल है। इसी अहिंसा धर्म का पालन करने के लिए जैन धर्म में रात्रि भोज नहीं करने व पानी छान कर पीने की बात कही गयी है, क्योंकि जैन धर्म अहिंसामयी धर्म है। इसमें सभी जीवों के प्रति दयाभाव रखने की बात कही गयी है। उन्होंने दिगम्बर जैन धर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैनी रात्रि भोजन नहीं करते। यह धार्मिक के साथ वैज्ञानिक दृष्टि से निषेध है, क्योंकि दिन की बजाय रात में जीवों की उत्पत्ति ज्यादा होती है। रात्रि में भोजन तैयार करते समय भोज्य पदार्थ के साथ सूक्ष्म जीव मिल जाते हैं और उनका विष व्यक्ति को रोगी बना देता है। मुनिराज ने पानी छान कर पीने से होने वाले फायदों के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने पानी कम बहाने का आह्वान करते हुए कहा कि अनावश्यक अधिक पानी ढोलना यह अहिंसा धर्म के खिलाफ है। पहले जमाने में जब नदी, कुए आदि से पानी लाना पड़ता था और रस्से बाल्टी आदिक से मेहनत पूर्वक पसीना बहाते हुए खीचना पड़ता था लेकिन आज 'स्विच दबाया पानी आया' वाली स्थिति में व्यक्ति झाडू लगाने की जगह पानी ढोल रहा है गाड़ी को पोछने की बजाय उसको स्नान करवा रहा है इसीलिए तो वाटर लेवल घटता जा रहा है और फिर भी पानी को रोकने का तरीका न समझे तो समस्या का हल कहाँ मिलेगा? नल को खुला छोड़ना भी जल के साथ मजाक उड़ाना है।

साभार: आर्जव-वाणी

विहार समाचार

अध्यात्म योगी, धर्मप्रभावक गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ विहार तारंगाजी से दिसम्बर 9 तारीख को प्रात: हडोल की ओर हुआ। पूरी कमेटी के लोगों की आँखों में आँसू छलक आये। पुन: मेरे गुरुवर कब पधारेंगे? ऐसे विचार से गुरुवर के साथ-साथ चल पड़े। पूरे तारंगा के लोग आचार्यश्री के साथ विहार कर रहे थे। आचार्यश्री विद्यासागर तपोवन वालों ने पादप्रक्षालन आरती और अर्घ आदि समर्पण किया। वहाँ प्रभु का दर्शन आचार्यश्री हडोल गाँव पहुँचे। वहाँ के मूलनायक भ. पार्श्वनाथ का दर्शन करने के पश्चात् आहारचर्या सम्पन्न हुयी तथा दोपहर में विहार कर दिया और बेराबर गाँव पहुँचे। वहाँ के मूलनायक श्री नेमिनाथ भगवान का दर्शन किया और आहारचर्या सम्पन्न हुयी। दोपहर में विहार हो गया और दूसरे दिन प्रात: ईडर की ओर विहार हुआ। गाँव के लोग बाजे के साथ गुरुवर की भक्ति करते हुए मन्दिर ले गये और आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का मंगल प्रवचन हुआ। दोपहर में नगर एवं पहाड़ी पर स्थित जिनालयों के प्रभु दर्शन करने के पश्चात् दूसरे दिन बड़ोली चिंतामणी पार्श्वनाथ, नागफणी पार्श्वनाथ, बिच्छीबाड़ा आदि गाँव के दर्शन करते हुए डूंगरपुर की ओर विहार हुआ। डूंगरपुर की समाज के लोगों की जय-जयकार के साथ एवं बैंडबाजे के साथ नगर प्रवेश हुआ। वहाँ के एस.पी. श्री अनिल जैन साहब ने अपने बंगले (गृह) पर आचार्यश्री का भव्य स्वागत पूर्वक आगवानी की और प्रवचन कराया और विहार में साथ रहे सभी श्रावक गणों का सम्मान भी किया गया। पश्चात् बाजे के साथ महावीर नगर के मन्दिर में पहुँचे। वहाँ पर करीब 6-7 दिन रहकर प्रवचन आदि के द्वारा धर्मप्रभावना की। विहार में साथ रहे श्री अरविन्द भाई गांधी, सूरत और सूरत की महिलायें, तारंगाजी के कमेटी के लोग सब आचार्यश्री से क्षमायाचना करके वहाँ से विदा हुये। 7 दिन के पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का ससंघ विहार पूर्व दिशा की ओर हुआ। आँतरी, वरदा, नान्दोड़ आदि गाँव होते हुए सागवाड़ा नगर में बाजे एवं जय-जयकार के साथ प्रवेश हुआ तथा प्रवचन के बाद आहारचर्या हुई। बहुत प्राचीन मन्दिरों के दर्शन किये। पश्चात् दोपहर में परतापुर नगर के कमेटी के लोगों ने आकर आचार्यश्री से शीतकालीन वाचना के लिए निवेदन किया। पश्चात् विहार भीलूड़ा, मोर होते हुए आदिनाथ कॉलोनी में प्रवचन व आहारचर्या कर मध्यान्ह में परतापुर नगर में बाजे के साथ एवं भारी संख्या में घर-घर के सामने पादप्रक्षालन, अर्घ, आरती आदि के साथ भ. नेमिनाथ मन्दिर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस विहार में अरविन्दभाई, हसमुखभाई, सुशील गंगवाल, स्नेहिलभाई आदि का विशेष सहयोग रहा।

परतापुर में करीब 10-12 दिन रहकर प्रवचन, आदि के द्वारा धर्म प्रभावना की। तत्पश्चात् आचार्यश्री का ससंघ विहार तलवाड़ा की ओर हुआ। तलवाड़ा नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। प्रवचन के पश्चात् आहार चर्या हुई। अगले दिन सामायिक के पश्चात् बांसवाड़ा की ओर विहार हुआ।

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

● मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

परम संरक्षक : ● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✳✳✳

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● रामगंजमण्डी : सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिठ्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳ सम्मानीय संरक्षक ✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री जैन बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● जयपुर : श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन, ● सुरत : श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेश भाई शाह।

✳ संरक्षक ✳

● श्री जैन विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● दिल्ली : श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद ● श्री जैन कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा ● श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी ● श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया, पांडीचेरी ● श्रीमति विमला मनोहर जैन, सूरत ● जयपुर : श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● उदयपुर : श्री प्रकाशचंद जैन, श्रीमती निधी राहुल जैन-अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● इंदौर : श्री सचिन जैन, स्मृति नगर

✳ विशेष सदस्य ✳

● श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● सुरत : श्री जैन हर्षद भाई मेहता, श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह-मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी, हरदा : श्री जैन नीलेश अजमेरा, अहमदाबादः श्री जैन रमेशभाई जोइतालाल मेहता

नोट : हमारी भाव विज्ञान पत्रिका में विशेष सदस्यों तक आजीवन सदस्यों की सूची हमेशा प्रकाशित की जाती है, और विषय वस्तु से अतिरिक्त स्थान उपलब्ध होने पर नए तथा संपूर्ण सदस्यों की सूची भी प्रकाशित की जाती है।

✳ नवागत सदस्य ✳

कोल्हापुरः श्री अमित नरेन्द्र कुमार जैन, सुभी सुप्रिया भगवान बडगावे; **परतापुर (बांसवाड़ा) :** श्री जैन संजय एन. दोशी, श्री जैन दिलीप कुमार शाह, श्रीमति कैलाश अनिल जैन, श्री जैन प्रकाश शाह

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....

जिला .... प्रदेश ....से

भाव विज्ञान पत्रिका हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/- ☐ पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/- ☐ परम संरक्षक रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/-☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/-☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/-☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा वर्तमान व्यवहारिक का पता :- ....

....

जिला .... प्रदेश ....

पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर .... मोबाईल ....

ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

आशीर्वाद एवं प्रेरणा : संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

- विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण
- सत् साहित्य समीक्षा।
- अहिंसात्मक जीवन शैली।
- व्यसन मुक्ति अभियान।
- हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।
- नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।
- रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्‌वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।
- धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।
- धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

कृपया पत्रिका को पढ़कर अपने परिजन को दें या किसी दि. जैन मंदिर, वाचनालय अथवा किसी दि. जैन धर्म क्षेत्र पर विराजमान कर दें।

कृपया यहां से निकालें

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।
   डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचन विला, कृष्ण विहार, वी.के. कोल नगर, (अजमेर राजस्थान)

प्रश्नोत्तरी में सुधार

कृपया भाव विज्ञान सितंबर 2015 की पत्रिका में प्रकाशित ''उत्तर पुस्तिका सितम्बर 2015'' के स्थान पर ''उत्तर पुस्तिका जून-2015'' सुधार कर पढ़े।

उत्तर पुस्तिका सितम्बर 2015

1. माघ कृष्णा द्वादशी
2. श्री दृढ़रथ जी
3. श्री अनगार
4. एक लाख पूर्व वर्ष
5. ना
6. हाँ
7. हाँ
8. हाँ
9. हिमनाश
10. शुक्रप्रभा
11. पुनर्वसु
12. तीर्थंकर महापुरुष के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान एवं निर्वाण के समय इन्द्र, देवगण तथा मनुष्यों के द्वारा जो विशेष उत्सव मनाया जाता है उसे कल्याणक कहते हैं। कल्याणक पाँच होते हैं। गर्भ कल्याणक, जन्म कल्याणक, दीक्षा कल्याणक, केवलज्ञान कल्याणक और मोक्ष कल्याणक।
13. माघ कृष्ण द्वादशी
14. अश्विन शुक्ल अष्टमी
15. चैत्र कृष्ण अष्टमी
16. पौष कृष्ण चतुर्दशी
17. सही
18. सही
19. गलत
20. सही

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन, अंक : 100

- ❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।
- ❖ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।
- ❖ उत्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखें। लिखकर काटे या मिटाए जाने पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

सही उत्तर पर (✓) सही का निशान लगावें-

प्र.1. श्री श्रेयांसनाथ भगवान कौन से स्वर्ग से अवतरित हुये थे ?

प्राणत स्वर्ग (   )   आणत स्वर्ग (   )   अच्युत स्वर्ग (   )

प्र.2. भ. श्रेयांसनाथ के शरीर की आयु ऊँचाई कितनी थी ?

80 धुनष (   )   60 धनुष (   )   50 धनुष (   )

प्र.3. भ. श्रेयांसनाथ ने कौन-से नक्षत्र में दीक्षा धारण की थी ?

धनिष्ठा नक्षत्र (   )   श्रवण नक्षत्र (   )   पूर्वाषाढ़ नक्षत्र (   )

प्र.4. भ. श्रेयांसनाथ की प्रथम आहारचर्या किस नगर में हुई थी ?

सिद्धार्थ नगर (   )   अरिष्ट नगर (   )   महानगर (   )

हाँ या ना में उत्तर दीजिये-

प्र.5. भ. श्रेयांसनाथ ने बयालीस वर्ष तक राज्य किया था। (   )

प्र.6. भ. श्रेयांसनाथ की आयु 84 वर्ष की थी। (   )

प्र.7. भ. श्रेयांसनाथ के पिता का नाम श्री सुदर्शन था। (   )

प्र.8. भ. श्रेयांसनाथ नाथवंशी थे। (   )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:-

प्र.9. भ. श्रेयांसनाथ के समवशरण में कुल .... मुनियों से युक्त थे।

(90 हजार, 84 हजार, 80 हजार)

प्र.10. भ. श्रेयांसनाथ की दीक्षा तिथि .... थी।

(फाल्गुन कृष्ण एकादशी, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा, माघ कृष्ण अमावस्या)

प्र.11. भ. श्रेयांसनाथ के समवशरण में प्रमुख आर्यिका .... थीं।

(वरुणा, सेना, धरणा)

दो पंक्तियों में उत्तर दें:-

प्र.12. तीर्थंकर घातिया, अघातिया कर्मों को नष्ट करने के लिये कौन-कौन से ध्यान करते हैं ?

....

....

....

सही जोड़ी मिलायें:-

प्र.13. भ. श्रेयांसनाथ के लिए प्रथम आहार दान दाता का नाम - कुन्थु

प्र.14. भ. श्रेयांसनाथ के समवशरण में प्रमुख गणधर का नाम - मनोहर

प्र.15. भ. श्रेयांसनाथ के दीक्षा पालकी का नाम - नंद

प्र.16. भ. श्रेयांसनाथ के केवलज्ञान के उद्यान का नाम - विमल प्रभा

सही (✓) या गलत (×) का चिन्ह बनाइये:-

प्र.17. भ. श्रेयांसनाथ तुम्बर वृक्ष के नीचे केवलज्ञान पाया। ( )

प्र.18. भ. श्रेयांसनाथ सम्मेदशिखर के संकुल कूट से मोक्ष गये। ( )

प्र.19. भ. श्रेयांसनाथ ने दो हजार मुनियों के साथ प्रतिमायोग धारण किया। ( )

प्र.20. भ. श्रेयांसनाथ के काल में प्रथम नारायण हुआ। ( )

आधार

1. उत्तर पुराण, 2. जैनागम संस्कार

प्रतियोगी-परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।